

और दरवाजा मुंह पर बंद हो गया।

वायुसेना पुलिस मारुति जिप्सी तेज रफ्तार से जा रही थी। ड्राइवर सीट के बगल में मैं, पश्चिमी वायु कमान परिसर में एक सुरक्षा अधिकारी के रूप में अग्रणी था। पीछे रिवॉल्वर के साथ दो मजबूत वायु योद्धा साथी थे। हम नई दिल्ली में रिंग रोड पर डिफेंस कॉलोनी के एक बंगले में रुके। स्मार्ट युनिफ़ॉर्म पहने, सिरपर पीक कैप, हाथ में एक वीआईपी ब्रीफकेस के पीछे दो सशस्त्र साथी, मैंने दरवाजे की घंटी बजाई और दरवाजे के खुलने का इंतजार करने लगा।

अंदर के व्यक्ति ने झटकेदार दरवाजे से अनुमान लगाया। 'लगता है वायु सेना से कोई वर्दी में है, क्या अंदर से संदेश सुना गया था।

'हकाल दो --- चोदों को' का जवाब था, हिंदी अश्लील एक गाली में !!!

लंबी अवधि के लिए दूसरी बार बेल रिंग पर दरवाजा खुल गया। उसे बंद करने से पहले 'कोई भी आपसे मिलना नहीं चाहता' शब्द बोले गए। मेरे पीछे खड़े हवलदार ने 'सीआईडी' सीरियल के 'दया टाइप' स्वर में कहा, 'सर, मैं किक खोलूं क्या? 'साले की ऐसी की ऐसी की तैसी'। मैंने बिना कुछकहे फिर से घंटी बजा दी। एक नहीं दो बार।

अब दरवाजा खुल गया। आवाज़ कह रही थी 'यह क्या है?' मैंने महसूस किया कि वह पोशाक से एक गृहिणी थी। अब मौका था। अब, कभी नहीं! इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने कहा, 'मैडम, मैं आपसे मिलने आया हूं। उसे नहीं'।

'तुम हमारे पीछे क्यों हो?' इतना कह कर महिला ने गुस्से के स्वर को थाम लिया। गोरा, सुंदर, सलवार कमीज, बाल बॉब। कान पर लटके कश्मीरी झुमके।

'हमें कुछदस्तावेजों की जरूरत थी। हम यह सुनिश्चित करने आए हैं कि पता गलत नहीं है क्योंकि आप हमारे कई पत्रों का जवाब नहीं देते हैं। क्या मुझे ठंडा पानी मिल सकता है? 'वह अंदर चली गई ठंडा पानी आया वहाँ विंग कमांडर ने अपने बालों को उलझाकर, अपनी मूछें घुमाते हुए, गोल्फ़ शॉर्ट्स में प्रवेश किया। उनके चेहरे पर तिरस्कार के भाव थे। मैं जल्दी से उठ खड़ा हुआ।

'सर, गुड मॉर्निंग, मैंने हाथ मिलाने की पहल की।

ओके, ओके कहकर अनिच्छा से खोखले हाथ से स्वीकार कर लिया। पानी आया और मुझे बैठाया। मैंने लिविंग रूम में तब तक देखा जब तक मैंने गिलास नीचे नहीं रख दिया। उदास माहौल, गंदे सोफे, पुराना फर्नीचर, लटकते कोब वेब।

'देखो स्क्वाड्रन लीडर ओक, मेरे सीने पर नेमप्लेट पढ़कर उसने कहा, 'मुझे वायु सेना से नफरत है। कृपया जाइए यहां से।' दरवाजे पर दस्तक देकर जो कहा गया था, वह मुझे सौम्य शब्दों में दोहराया गया।

'सर, मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से मिलना चाहता हूं क्योंकि आपने अपना पहचान पत्र, फ्लाईंग क्लोदिंग और कार्ड आदि जमा नहीं किए हैं। मुझे इसे लेने के लिए वरिष्ठों द्वारा दबाव डाला जाता है। नहीं तो मेरे खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इसके अलावा, मैं उत्सुक हूँ कि आप कौन हो? आप वायु सेना से इतने नाराज़ क्यों हो?'

'तुम बहुत छोटे हो, तुम्हें पता नहीं। मेरा बॉस और मुझे में तूत तू मैं मैं हो गई। मुझे किसी की बात सुनने की आदत नहीं है। अगर गलत है तो कभी नहीं। 'तो एक दिन कुछ साल पहले, मैंने पश्चिमी वायु कमान के प्रमुख से झगड़ा किया, वहां वापस नहीं जाने का फैसला किया, रिटायरमेंट पेपर देकर निवृत्त हो गया और घर पर ही रहा।

"मुझे वायु सेना की परवाह नहीं है," उन्होंने कहा।

'अच्छा सर, आप सही हो सकते हैं, लेकिन मैंने क्या गलत किया है? मैं आपसे कहने आया हूं कि मुझे कम से कम अपना पहचान पत्र तो दीजिए। चूंकि यह एक अनुशासनात्मक मामला है, इसलिए मैं आपको एक सुरक्षा अधिकारी के रूप में व्यक्तिगत रूप से देखने आया हूं।

'आप मेरी स्थिति को समझ सकते हैं सर'। उन्होंने अपना सर हिलाया। वे अंदर गए और आईडेंटिटी कार्ड लेकर लौट आए। उसने अपनी नाराजगी व्यक्त की, दूर धकेल दिया ताकि वह मुझ तक पहुंचे।

मैं 'थैंक्स' कहकर उठा। और कहा, 'सर, यह काम हो गया, लेकिन क्या मुझे कुछ और पूछना चाहिए?

'आपका गुस्सा वायुसेना पर नहीं है। इसमें लोगों के साथ है। लेकिन आप खुद को सजा क्यों दे रहे हैं?

'मैं नहीं समझा?' उन्होंने कहा।

'सर, मेरा पेशा अकाउंट्स ब्रांच में है। मैं हर महीने बकाया मामले की समीक्षा में आपका नाम देखता हूं। आप दावा क्यों नहीं करते कि आपका पीएफ अभी भी वही है? बोले कुछनहीं।

'सर, वह पैसा आपका है, स्व-अर्जित। इसका वायुसेना से कोई लेना-देना नहीं है। आप उस राशि से इनकार क्यों कर रहे हैं?

'मैं कहती हूं' कहकर उसकी मिसेज ने अपने पति को सम्बोधित किया और मुझसे बातें करने लगी। 'एके, इसका कभी एहसास नहीं होगा। मैं इन दिनों सेंट्रल स्कूल में पढ़ाता हूं, इसलिए हम किसी तरह घर चलाते हैं। भविष्य निधि का पैसा, पेंशन वह कुछ भी लेने को तैयार नहीं! अब श्रीमती जी बोल रही थीं और मैं सुन रही थी।

'कहो मुझे क्या करना है। उसने अपने पति की ओर देखा और कहा, 'ठीक है, तुम सही हो, लेकिन अब अपनी स्थिति देखो।

बच्चों को देखो! मैं कितनी भी बार तुमसे कहूं, तुम सुनने को तैयार नहीं हो! .... अब समझो ....!'

'स्क्वाड्रन लीडर ओक, अब आप जा सकते हैं।' तो विंग कमांडर ने मेरे सामने अपनी पत्नी की बातों से परेशान होकर मुझसे कहा कि वह अपनी पत्नी से नाराज हैं।

मैंने मौके की बारीकियों को मानते हुए कहा, 'सर, अगर आप बुरा न मानें तो मैं एक पेपर लेकर आया हूं। यदि आप इस पर हस्ताक्षर करते हैं, तो मुझे आपके भविष्य निधि का पैसा मिल सकता है। केंद्रीय लेखा कार्यालय में मेरे मित्र हैं। मैं उनसे संपर्क करूंगा। रेवेन्यू स्टाम्प से कोरे दावे पर दस्तखत करके वे अंदर चले गये...!

...

कुछदिनों बाद ... मेरे कार्यालय का दरवाजा खटखटा। मैंने ऊपर देखा। वहाँ एक आदमी खड़ा था।

अजनबी का व्यक्तित्व दिखाई दिया। यह कहते हुए उसने अपना परिचय दिया, 'हाय, मैं एके हूँ, तुम मेरे घर आए थे?'

हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। क्या वही विंग कमांडर थे? उलझे बाल...दाढ़ी बढ़ी! मुझे विश्वास नहीं हो रहा था! सभ्य पोशाक में वे कितने बदल गए थे!...

वे बैठे, जैसे ही मैंने कहा, 'कृपया बैठ जाइए'। फिर कसकर हाथ पकड़ कर बोले,

'स्क्वाड्रन लीडर ओक, अगर आप उस दिन नहीं आते, तो शायद मैं 'आज आपको नहीं देखाई देता!

'धन्यवाद, मुझे मेरे प्राविडन्ट फंड के पैसे मिल गए। अब पेंशन पेपर तैयार है। पर तुम्हारी वजह से, मेरी शपथ मुझे तोडनी पडी।

इस वेस्टर्न एयर कमान इमारत का फिर से मुंह न देखने का प्रण तोड़कर तुम्हें मिलने आना पडा। उन्होंने बचे हुए वायुसेना के पेपर जैसे कार्ड, फ्लाईंग हेलमेट, नेविगेशनल मैप आदि मुझे सौंप दिये।

उस दिन आपने कहा था कि संगठन बुरा नहीं होता, बल्कि उसके अंदर काम करने वाले लोग इसे अच्छा या बुरा बनाते हैं! मेरे जैसे कई लोग भावनात्मक रूप से आवेशित हो जाते हैं और खुद को चोट पहुँचाते हैं!

लेकिन आप जैसे लोग अपमान या एहसान की परवाह नहीं करते।

वायु सेना के एक प्रतिनिधि के रूप में निस्वार्थ भाव से आप मेरे घर तक आने की सहानुभूतिपूर्वक परवाह करते हैं।

थँक्स यार...!

जाने से पहले हाथ मिलाने पर उनकी कठोर पकड़ समझ में आती थी। एक दिन मेरे चेहरे पर दरवाजे को पटक देने से आहत मेरा अहंकार ठंडा हुआ!

....

Misalpav.com पर ४०००से जादा क्लिक्स पडे हैं।

५ जनवरी २०२२ को संपादित